प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) :अध्यक्ष महोदया जी, मैं सदन के सभी सदस्यों की ओर से और मेरी तरफ से इस सोलहवीं लोक सभा के पूरे कार्यकाल को अध्यक्षा के रूप में जिस धैर्य के साथ, संतुलन के साथ और हर पल मुस्कुराते रहते हुए आपने सदन को चलाया, इसके लिए आप अनेक-अनेक अभिनंदन की अधिकारी हैं।

देवी अहिल्या बाई जी का जीवन और उनकी शिक्षा का आपके मन पर बड़ा प्रभाव है। उनसे पायी हुई शिक्षा को, उनसे पाए हुए आदर्शों को यहां चरितार्थ करने के लिए आपने हर पल कोशिश की है। उन्हीं आदर्शों पर चलते हुए कभी दाईं तरफ के लोगों को तो कभी बाईं तरफ के लोगों को आपने उस तराजू से तोलकर कठोर निर्णय भी किए हैं। लेकिन वे मूल्यों के आधार पर लिए गए, आदर्शों के आधार पर लिए गए निर्णय हैं और लोक सभा की उत्तम परिपाटी को बनाने के लिए वे सदा-सर्वदा उपयुक्त रहेंगे, ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

आपने जिस SRI संगठन की शुरूआत की, मैं समझता हूं कि वह नये सदस्यों के लिए अपने आप में एक बहुत उपकारपूर्ण काम आपने किया है। उसने डिबेट को, उसके कंटेंट को, जानकारियों को और अधिक समृद्ध करने में बहुत बड़ी भूमिका अदा की है।

अध्यक्ष महोदया, वर्ष 2014 में मैं भी उन सांसदों में से एक था, जो पहली बार चुनकर आए थे। मैं न इसकी ज्योग्राफी जानता था, किस गली से कहां जाते हैं, यह भी पता नहीं था। मैं बिलकुल नया था और हर चीज को बड़ी जिज्ञासा से देखता था कि यह क्या है, यहां क्या है? यह सब देख रहा था। जब मैं यहां बैठा तो ऐसे ही देख रहा था कि ये बटन किस चीज के लिए हैं और समझने की कोशिश कर रहा था। मैंने यहां एक प्लेट देखी। उस प्लेट पर, मेरी जानकारी है कि मुझ से पहले 13 प्रधान मंत्री बने, जिन्होंने इस स्थान पर बैठकर अपना दायित्व निभाया है, लेकिन जब मैंने प्लेट देखी तो उस पर केवल तीन ही प्रधान मंत्रियों के नाम हैं। ऐसा क्यों हुआ होगा, क्या तर्क होगा? लिबरल विचार के जो बहुत बड़े विद्वान लोग रोज उपदेश देते रहते हैं, वे जरूर इस पर चिंतन करेंगे और कभी न कभी हमारा मार्गदर्शन करेंगे। यानी हर चीज मेरे लिए नई थी, इसलिए मेरे अंदर जिज्ञासा थी और मैं देख रहा था।

करीब-करीब तीन दशक बाद एक पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनी। आज़ादी के बाद पहली बार कांग्रेस गोत्र की नहीं है, ऐसी पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनी। कांग्रेस गोत्र नहीं था, ऐसी मिलीजुली सरकार अटल जी की बनी थी और कांग्रेस गोत्र नहीं है, ऐसी पूर्ण बहुमत वाली पहली सरकार वर्ष 2014 में बनी। इस सोलहवीं लोक सभा में 17 सत्र हुए। आठ सत्र ऐसे रहे, जिसमें 100 प्रतिशत से अधिक काम हुआ । अगर हम औसतन देखें, तो करीब 85 प्रतिशत आउटकम के साथ आज हम विदाई ले रहे हैं। संसदीय मंत्री का अपना एक दायित्व रहता है। अभी तोमर जी संभाल रहे हैं। प्रारंभ में वेंकैया जी देखते थे। उन्होंने कुशलता से निभाया है। वह अब उपराष्ट्रपति पद पर हैं और हमारे वरिष्ठ सदन के संचालक के रूप में भी एक अहम भूमिका निभा रहे हैं। अनंतकुमार जी की कमी हमें जरूर महसूस हो रही है। हमारे एक हंसते-खेलते-दौड़ते साथी की, लेकिन इन सबने जो काम किया है, मैं उनका भी अभिनंदन करता हूं। यह 16वीं लोक सभा है, इस बात के लिए भी हम हमेशा गर्व करेंगे, क्योंकि देश में इतने चुनाव हुए, उसमें पहली बार सबसे ज्यादा महिला सांसदों वाला हमारा यह कालखंड है।...(व्यवधान) उसमें भी 44 महिला सांसद पहली बार आई थीं और पूरे कार्यकाल में देखा गया है कि महिला सांसदों का प्रतिनिधित्व, पार्टिसिपेशन और बातचीत की ऊंचाई हर प्रकार से हमको रजिस्टर करनी चाहिए। सभी महिला सांसद अभिनंदन की अधिकारी हैं। देश में पहली बार कैबिनेट में सर्वाधिक महिला मंत्री हैं और देश में पहली बार सिक्योरिटी से संबंधित कमेटी में दो महिला मंत्री प्रतिनिधित्व कर रही हैं, रक्षा मंत्री और विदेश मंत्री। यह भी अपने आपमें और यह भी खुशी की बात है कि पहली बार स्पीकर भी महिला हैं, इसके साथ ही साथ हमारी सेक्रेट्री जनरल भी महिला के रूप में विराजमान हैं। इसलिए लोक सभा सेक्रेट्री जनरल और उनकी सारी टीम को और यहां के पूरे परिसर को संभालने वाला हर कोई अभिनंदन का अधिकारी है। मैं उनको भी बहुत-बहुत बधाई देता हूं और बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं। इस सदन में, कोई इसका अर्थ यह न लगाए कि मैं यहां पर कोई गवर्नमेंट की उपलब्धियां बताने के लिए खड़ा हुआ हूं। लेकिन जो काम इस सदन ने किए हैं, अगर पांच साल के उस ब्यौरे को देखें और हम सब इसके हिस्सेदार हैं। विपक्ष में रहकर भी इसकी ताकत को बढ़ाने का काम किया है। पक्ष में रहकर भी उसकी मदद की है। इसलिए सदन के सभी साथियों का उसमें गौरवपूर्ण योगदान रहता है। हमारे लिए बीते साढ़े चार वर्षों में, इस कार्यकाल में, हम सबके लिए

खुशी की बात है कि आज देश दुनिया में 6वें नंबर की इकोनामी बना है। इस कार्यकाल के लिए भी यह गौरव का काम है। हम सभी इसके भागीदार हैं, नीति-निर्धारण यहीं से हुआ है। 5 ट्रिलियन डॉलर की इकोनामी बनने की दिशा में हम दरवाजे पर दस्तक देने की तैयारी में हैं। हम इतनी तेजी से बढ़ रहे हैं। इसके लिए भी इस सदन की गतिविधियों का अपना बहुत बड़ा रोल है।

आज भारत का आत्मविश्वास बहुत बढ़ा है और आगे बढ़ने के लिए बड़ी ताकत होती है- आत्मविश्वास, जीतने की ताकत होती है- आत्मविश्वास, संकटों से जूझने का सामर्थ्य होता है- आत्मविश्वास। आज देश आत्मविश्वास से भरा हुआ है। इस सदन ने जिस सामूहिकता के साथ, जिस गति के साथ, जिस निर्णय प्रकियाओं को आगे बढ़ाया है, इस विश्वास को पैदा करने में इसने बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। आज विश्व की सभी प्रतिष्ठित संस्थाएं, विश्वमान्य संस्थाएं, भारत के उज्ज्वल भविष्य के संबंध में, बिना हिचकिचाहट एक स्वर से उज्ज्वल भविष्य के संबंध में अपनी संभावनाएं बताती रहती हैं। यह देश के लिए स्वाभाविक रूप से, यही कालखंड रहा है कि भारत डिजिटल वर्ल्ड में अपनी जगह बना चुका है। अनेक उपलब्धियां प्राप्त की हैं, ऊर्जा के क्षेत्र में और ऊर्जा बचत के क्षेत्र में। दुनिया जब ग्लोबल वार्मिंग की चर्चा कर रही है।

इस ग्लोबल वार्मिंग के जमाने में यह देश है, जिसने इंटरनेशनल सोलर एलायंस को लीड किया और जिस प्रकार से आज विश्व में पैट्रोलियम प्रोडक्ट वाले देशों के गठबंधन की एक ताकत बनी है, वह दिन दूर नहीं होगा, जब भारत के इस निर्णय का असर आने वाले दशकों में नज़र आएगा। उतनी ही ताकत के साथ इंटरनेशनल सोलर एलायंस एक ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ लड़ाई, पर्यावरण की रक्षा की चिंता, लेकिन दुनिया को एक ऑल्टरनेट जीवन देने की व्यवस्था करने में मैं मानता हूं कि यह कार्यकाल अपनी बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रहा है।

स्पेस की दुनिया में भारत ने अपना स्थान बनाया है, लेकिन अधिकतम सैटेलाइट लांच करने का काम इसी कार्यकाल ने दुनिया के लिए भारत की ताकत को बढ़ा रहा है। एक लांचिंग पैड के रूप में आज विश्व के लिए भारत एक डेस्टिनेशन बना है। वह इकोनोमिक एक्टिविटी का भी एक सैंटर बनता चला जा रहा है।

मेक इन इंडिया की दिशा में मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में भारत आज आत्मनिर्भरता के साथ आगे बढ़ने की दिशा में कई कदम उठा रहा है। वैश्विक परिवेश में आज भारत को गंभीरता से सुना जाता है। कभी-कभी मैं कहता हूं, लोगों को एक भ्रम होता है कि मोदी हैं या सुषमा जी हैं, इनके कार्यकाल में दुनिया में हमारी इज्जत बहुत बढ़ गई है, दुनिया में वाह-वाही हो रही है। लोग वह कहते होंगे, लेकिन रियलिटी जो है, वह और है। जिस रियलिटी का मूल कारण है, पूर्ण बहुमत वाली सरकार। दुनिया पूर्ण बहुमत वाली सरकार को रिकॉग्नाइज करती है। 30 साल का हमारा बीच का काल खंड, वैश्विक परिवेश में इस कमी के कारण देश को बहुत नुकसान हुआ है। 30 साल के बाद वर्ष 2014 में, क्योंकि जब उस देश का नेता जिसके पास पूर्ण बहुमत होता है, वह जब दुनिया के किसी भी नेता से मिलता है तो उसको मालूम है कि इसके पास मैनडेट क्या है और उसकी अपनी एक ताकत को इस बार मैंने पांचों साल अनुभव किया है कि विश्व में देश का एक स्थान बना है और उसका पूरा यश न मोदी को जाता है, न सुषमा जी को जाता है, सवा सौ करोड़ देशवासियों के 2014 के उस निर्णय को जाता है।

उसी प्रकार से इसी कार्यकाल में विदेशों में अनेक संस्थाओं में भारत को स्थान मिला, विदेशों में सुना गया। अब हम देखें बंगलादेश - इसी सदन ने सर्वसम्मति से लैंड डिस्प्यूट का सोल्यूशन किया। यह बहुत बड़ा काम किया है। भारत विभाजन से विवादास्पद बंगलादेश बनने के बाद यह संकट के रूप में चला आया, लेकिन उसका समाधान भी इसी सदन ने किया और मैं समझता हूं कि हमारी अपनी यह विशेषता रही है कि हमने मिल-जुलकर इस काम को किया और सर्वसम्मति का यह संदेश दुनिया को बड़ी ताकत देने वाला संदेश गया है। मैं इसके लिए इस सदन का विशेष रूप से दिल से आभार व्यक्त करना चाहता हूं। मैं सभी दलों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं।

इसी प्रकार से हमारी विदेश नीति का एक नया पहलू उभरकर आया है। दुनिया में ह्यूमैन राइट्स, ह्यूमैन वैल्यूज जाने-अनजाने में जैसे दुनिया के किसी एक छोर का ही अधिकार रहा है, बाकी लोगों को तो इससे कोई लेना-देना ही नहीं है। हम तो जैसे मानव अधिकार विरोधी, इसी प्रकार की हमारी छवि बन गई। जबकि मानवता और वसुधैव कुटुम्बकम् की बात करने वाला यही देश है, लेकिन न जाने क्यों ऐसी छवि बन गई। लेकिन पिछले पांच सालों में हम देखेंगे, नेपाल में भूकम्प आया हो, मालदीव में पानी का संकट हुआ हो, फिजी के अंदर साइक्लोन की मुसीबत आई हो, श्रीलंका में

अचानक साइक्लोन की मुसीबत आई हो, बंगलादेश में वहां के लोग म्यांमार के लोगों के कारण आई हुई आपदा झेलते रहते हों, हमारे जो लोग विदेशों में फंसे थे, यमन में फंसे थे, उनको हजारों की तादाद में वापस लाने का काम हो। नेपाल में 80 देशों के लोगों को निकालकर हमने यहां सुरक्षित भेजा। इस तरह मानवता के काम में भारत ने एक बहुत बड़ी भूमिका अदा की है।

महोदया, योग पूरे विश्व में एक गौरव का विषय बन गया है। यूएन में अब तक जितने रेजोल्युशन पास हुए हैं, सबसे तेज़ गति से, सबसे ज्यादा समर्थन से अगर कोई रेजोल्युशन पास हुआ है तो योग का पास हुआ है।

यूएन के अंदर बाबा साहब अंबेडकर की जयंती और महात्मा गांधी की जयंती मनाई जा रही है। विश्व के सभी देशों में बाबा साहब अंबेडकर के सवा सौ वर्ष मनाए गए हैं। महात्मा गांधी जी की जयंती मनाई गई है और गांधी जी की 150वीं जयंती, कोई कल्पना नहीं कर सकता है कि वैष्णव जन तो तैने कहिए, जो हम लोगों की रगों में है, आज 150वीं जयंती दुनिया के सवा सौ देशों के प्रसिद्ध गायकों ने वैष्णव् भजन को उस रूप में गा कर के महात्मा गांधी को बहुत बड़ी श्रद्धांजली दी है। यानी विश्व में एक सॉफ्ट पॉवर कैसे ले जायी जा सकती है, इसका एक उदाहरण हम आज अनुभव कर रहे हैं। 26 जनवरी को हमने देखा होगा कि महात्मा गांधी को सैंटर में रखते हुए, 26 जनवरी की झांकियों में सभी राज्यों ने किस प्रकार से गांधी को अद्भुत रूप से प्रस्तुत किया, यानी 150वीं जयंती और महात्मा गांधी जी को स्मरण करना। हमने इस सदन में, इस कार्यकाल में संविधान दिवस मनाया। हमने इस सदन में, इस कार्यकाल में बाबा साहब की 125वीं जयंती पर विशेष चर्चा की। हमने ही सदन में, इस कार्यकाल में यूएन के सस्टेनेबल डेवल्पमेंट गोल्स के लिए समय दिया और सबने मिल कर सस्टेनेबल डेवल्पमेंट गोल्स के संबंध में चर्चा की। यह अपने आप में नई-नई परिपाटियां इसी कार्यकाल में, इसी सदन में आपके नेतृत्व में संभव हुआ है। इसलिए इस सदन के सभी सदस्य आपके नेतृत्व का अभिनंदन करते हैं और आपका आभार व्यक्त करते हैं।

महोदया, इस सदन में करीब 219 बिल इंट्रोड्यूज़ हुए और 203 बिल पारित हुए। इस सदन में जो आज सांसद हैं, 16वीं लोक सभा के संबंध में, अपने जीवन के संबंध में जब भी किसी को बताएंगे, चुनाव के मैदान में जाएंगे, तब भी बताएंगे और चुनाव के बाद भी जब मौका मिलेगा, कुछ लिखने की

आदत होगी तो कोई जीवनी लिखेगा, तो जरूर लिखेगा कि वे उस कार्यकाल के सदस्य थे, जिस कार्यकाल में उन्होंने कालेधन और भ्रष्टाचार के खिलाफ कठोर कानून बनाने का काम किया है। इस देश में ऐसे कानून जो पहले कभी नहीं बन पाते थे, वे इस सदन ने बनाए और इसका बहुत बड़ा प्रभाव हुआ। विदेशों में जमा हुए कालेधन के खिलाफ बहुत बड़े कानून बनाने का काम यहीं हुआ। दिवालिया कंपनियों से जुड़ा हुआ आईबीसी का कानून इसी सदन ने बनाया। बेनामी संपत्तियों के संबंध में कानून इसी सदन ने बनाया। आर्थिक अपराध करने वाले भगोड़ों के विरूद्ध कानून इसी सदन ने बनाया। मैं समझता हूँ कि इन पांच सालों में इस सदन और इस कार्यकाल ने काले धन और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए जो कानूनी व्यवस्था चाहिए, जो कानूनी हक चाहिए, अंतर्राष्ट्रीय जगत में हमारे कानून की एक ताकत होनी चाहिए, इसके लिए जो कुछ करना चाहिए, उस उत्तमोतम पुरूषार्थ से इस सदन ने पारित कर के देश की आने वाली शताब्दी की सेवा की है। इसलिए इस सदन को, आपके नेतृत्व को अनेकानेक अभिनंदन, न सिर्फ इस पल बल्कि आने वाली पीढ़ियां भी देंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

महोदया, यही सदन, जिसने जीएसटी का बिल पारित किया और रात को 12 बजे संयुक्त सत्र बुलाया और क्रेडिट लेने की कोशिश किए बिना पूर्व वित्त मंत्री और उस समय के राष्ट्रपति के हाथों से जीएसटी को लागू किया, ताकि सबको इसका हक मिले। सबका साथ, सबका विकास उसमें भी चले, इसका भी एक प्रामाणिक प्रयास किया गया। उसी प्रकार से यही सदन है, जिसने आधार बिल को, एक बहुत बड़ी कानूनी ताकत दी। आधार दुनिया के लिए अजूबा है। इस देश ने इतना बड़ा काम किया है, विश्व इसको जानने की कोशिश कर रहा है। इस कार्यकाल के सदन ने इस काम को कर के विश्व में बहुत बड़ा काम किया है।

महोदया, देश आजाद हुआ, लेकिन पता नहीं वह कौन सी हमारी मानसिकता थी कि हम शत्रु संपत्ति पर निर्णय नहीं कर पाते थे।

बहुत कठोरतापूर्वक शत्रु सम्पत्ति बिल पारित करके भारत के 1947 के उन घावों के खिलाफ जो कुछ भी चल रहा था, उस पर काम करने का काम किया है। इस सदन ने सामाजिक न्याय की दिशा में भी बहुत ही लम्बे अरसे तक समाज पर प्रभाव पैदा करे। उच्च वर्ण कहे जाने वाले लोगों के

लिए यानी गरीब लोगों के लिए आरक्षण की व्यवस्था, बिना कोई कटुता, इसकी सबसे बड़ी ताकत यही है कि बिना कोई उलझन, किसी के मन में आशंका न रहते हुए समाज के दबे, कुचले एक वर्ग को उनकी बातों को वजन दिया गया और उनको विश्वास देते हुए कानून पारित किया। दोनों सदन के सभी दलों के सभी सांसद इसके लिए साधुवाद के पात्र हैं और इसके लिए मैं समझता हूँ कि यह बहुत बड़ा काम यह 10 प्रतिशत आरक्षण का हुआ है। उसी प्रकार से ओबीसी के लिए कमीशन बनाने वाला विषय हो या एससी/एसटी एक्ट की सुप्रीम कोर्ट के बाद जो मिस-अंडरस्टैंडिंग हुई उसको ठीक करने का काम हो।

मैटरनिटी बेनिफिट बिल, विश्व के समृद्ध देश भी इस बात को सुनकर आश्चर्य होता है कि क्या भारत में 12 हफ्ते से लेकर मैटरनिटी लीव 26 हफ्ते कर दी है? इस बात को आज विश्व, भारत की एक आगे की सोच वाले देश के रूप में देख रहा है। यह काम इसी सदन ने किया है। सदन कानून बनाता है, लेकिन इस बात के लिए भी यह कार्यकाल देश और दुनिया याद रखेगी कि जो कानून बनाने वाला यह वर्ग है, उन्होंने कानून खत्म करने का भी काम किया। 1400 से ज़्यादा कानून खत्म इसी सदन के सदस्यों ने करके, एक जंगल जैसा कानूनों का बन गया था, उस पर रास्ते खोजने की दिशा में एक शुभ शुरुआत की है। 1400 करने के बाद भी मैं कहता हूँ कि शुभ शुरुआत हुई है। अभी भी करना बहुत बाकी है और उसके लिए मुलायम सिंह जी ने आशीर्वाद दिया ही है।

एक बहुत बड़ा काम और मैं मानता हूँ कि देश को इसको अच्छे ढंग से जैसे पहुँचना चाहिए था, हम पहुँचा नहीं पाए हैं। हम सभी सांसदों पर एक कलंक हमेशा लगा रहता था कि हम ही लोग हमारे वेतन तय करते हैं। हम ही लोग मर्जी पड़े उतना बढ़ा देते हैं, हम देश की परवाह नहीं करते हैं और जिस दिन सांसदों का वेतन बढ़ता था दुनिया भर की टीका-टिप्पणियाँ हमारे पर होती थीं और यह पिछले 50 साल से हो रही थीं । पहली बार इस समय के सभी सांसदों ने मिलकर इस आलोचना से मुक्ति का रास्ता खोज लिया और एक ऐसी संवैधानिक व्यवस्था बना दी कि उस संविधान की व्यवस्था के तहत औरों का जब होगा, इनका भी हो जाएगा। अब स्वयं इस काम के भागीदार सांसद अकेले नहीं होंगे और सांसदों को बहुत बड़ी मुक्ति आलोचना से मिल गई। लेकिन इतने उत्तम निर्णय कि जिस

प्रकार से उसको रजिस्टर होना चाहिए था, जिसकी वाहवाही और कई सालों से सांसदों को गालियाँ सुननी पड़ी हैं, बड़े-बड़े वरिष्ठ नेताओं को गालियाँ सुननी पड़ी हैं उससे मुक्ति देने का काम किया।

हमारे जितेन्द्र जी ने अच्छा खाना तो खिलाया, लेकिन बाहर हम आलाचेना सुनते थे कि कैंटीन के अंदर पैसा बहुत कम है और बाहर महँगा है। एमपी क्यों ऐसा करते हैं? मुझे खुशी है कि जितेन्द्र जी की कमेटी ने मेरी भावना को स्वीकार किया, स्पीकर महोदया ने भी स्वीकार किया और जो बहुत सस्ते में यहां दिया जाता था, आपको जेब में थोड़ा ज्यादा नुकसान हो गया, लेकिन उसमें से भी मुक्ति पाने की दिशा में हमने कदम बढ़ाया है और पूर्ण रूप से पहुँचने में भी आने वाले दिन में हमें अच्छी ताकत आकर हम वह भी कर लेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

उसी प्रकार से इस सदन को और बहुत सी बातों का ज़रूर आनन्द आएगा । हम कभी-कभी सुनते थे भूकम्प आएगा, लेकिन पाँच साल का कार्यकाल पूरा हो रहा है, कोई भूकम्प नहीं आया। कभी हवाई जहाज उड़े और बड़े-बड़े लोगों ने हवाई जहाज उड़ाए, लेकिन लोकतंत्र और लोक सभा की मर्यादा इतनी ऊँची है कि भूकम्प को भी पचा गया और कोई हवाई जहाज उसकी ऊँचाई पर नहीं जा पाया है।

यह इस लोकतंत्र की ताकत है, इस सदन की ताकत है। कई बार तीखी नोक झोंक भी हुई, कभी उधर से हुई, कभी इधर से हुई, कभी कुछ ऐसे शब्दों का भी प्रयोग हुआ होगा, जो नहीं होना चाहिए। इस सदन में किसी भी सदस्य के द्वारा, जरूरी नहीं कि इस तरफ के, उस तरफ के भी, इस सदन के नेता के रूप में मैं जरूर “मिच्छामी दुक्कड़म” कहूँगा। क्षमा प्रार्थना के लिए जैन पर्युषण पर्व में “मिच्छामी दुक्कड़म” एक बहुत बड़ा संदेश देने वाला शब्द है और उस भावना को मैं प्रकट करता हूँ। मल्लिकार्जुन से हमारा भी थोड़ा बहुत रहता था। अच्छा होता कि आज उनका गला ठीक होता, तो आज भी कुछ लाभ मिलता। कभी-कभी मैं उनको सुन नहीं पाता था, तो बाद में मैं पूरा डिटेल देख लेता था और यह आवश्यक भी था, लेकिन उसके साथ-साथ मेरी विचार चेतना को जगाने के लिए उनकी बातें बहुत काम आती थीं। एक प्रकार से मेरे भाषण खाद-पानी वहीं से डल जाता था। उसके लिए भी मैं खड़गे साहब का बहुत आभारी हूँ। मैं कहूँगा, जैसा कहा गया कि लंबे समय तक, पूरा समय बैठना, किसी समय हम देखते थे कि आडवाणी जी सदन में पूरे समय बैठते थे। मैं खड़गे जी को देखता

हूँ कि वे पूरा समय बैठते हैं। यह हम सांसदों के लिए सीखने वाला विषय है। यह भी कम बात नहीं है कि करीब-करीब 50 साल उनके जनप्रतिनिधित्व के होने को आए हैं। उसके बावजूद भी जनप्रतिनिधि के नाते मिली हुई जिम्मेदारी को जिस बखूबी आपने निभाया है, मैं आदरपूर्वक आपका अभिनन्दन करता हूँ। मैं पहली बार यहाँ आया था, मुझे बहुत सी चीजें नई जानने को मिलीं, जिसका मुझे कुछ अर्थ ही जिन्दगी में पता नहीं था। पहली बार मुझे पता चला कि गले मिलना और गले पड़ना में क्या अंतर होता है। यह मुझे पहली बार पता चला। मैं पहली बार देख रहा हूँ कि सदन में आँखों से गुस्ताखियाँ होती हैं। ये आँखों की गुस्ताखियों वाला खेल भी पहली बार इसी सदन में देखने को मिला और देश की मीडिया ने भी उसका बहुत मजा लिया। संसद की गरिमा बनाए रखना हर सांसद का दायित्व रहता है और हम सबने उसकी भरपूर कोशिश की है। इस बार हमारे सांसद महोदयों के टैलेंट का भी बड़ा-बड़ा अनुभव आया। अभी जब मैं एक दिन राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर भाषण कर रहा था, इस सदन में मुझे ऐसा अट्टहास सुनने को मिलता था, ये जो एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री वाले हैं, उनको इस प्रकार के अट्टहास की जरूरत है, यू-ट्यूब से इतना देने के लिए अलाऊ कर देना चाहिए। शायद अच्छे-अच्छे कलाकार भी ऐसा अट्टहास नहीं कर पाते होंगे, जो यहाँ पर सुनने को मिलता था। उसी प्रकार से ऐसी वेशभूषा और यहाँ हमारे टीडीपी के साथी नहीं हैं, लेकिन टीडीपी के हमारे सांसद नारामल्ली शिवप्रसाद जी क्या अद्भुत वेशभूषा पहनते थे। सारा टेंशन उनके अटेंशन में बदल जाता था। इन हँसी, खुशियों के बीच हमारा यह कार्यकाल बीता है। मुझ जैसे एक नये सांसद ने आप सबसे बहुत कुछ सीखा है। आप सबकी मदद से नया होने के बावजूद भी आपने मुझे कभी कमी महसूस होने नहीं दी। आप सब साथियों, सभी तरफ से, सबने और आपके नेतृत्व में, आपके मार्गदर्शन में एक प्रथम पारी की मेरी शुरूआत में जो मदद की है, इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ। मैं भी आदरणीय मुलायम सिंह जी का विशेष रूप से आभारी हूँ, उनका स्नेह हमारे लिए बहुत मूल्यवान है।

सबके लिए मूल्यवान है। सभी वरिष्ठ जनों का स्नेह मूल्यवान होता है। मैं फिर एक बार आपको हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इस परिषद् से जुड़े हुए सभी स्टाफ लोगों को भी अन्त:करण से अभिनंदन देता हूं, जिन्होंने सभी सांसदों की देखभाल की। कार्य के लिए जो कुछ भी आवश्यक व्यवस्था करनी पड़ती थी, उसे की। मैं सभी सांसदों को शुभकामनाएं देता हूं कि एक स्वस्थ

लोकतांत्रिक परंपरा के लिए जब हम जनता के बीच जाने वाले हैं तो हम स्वस्थ परंपरा को कैसे आगे बढ़ाएं, एक तन्दुरुस्त स्पर्धा कैसे करें, उस तन्दुरुस्त स्पर्धा को लेकर लोकतंत्र को तन्दुरुस्त बनाने में हम अपनी भूमिका कैसे अदा करें, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, इसी भावना के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं।

मैं फिर एक बार नत मस्तक होकर इस सदन के सभी सांसदों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

धन्यवाद।